ROHTAS MAHILA COLLEGE SASARAM
DEPartment of - History - Subsidiary
21-05-2020 B.A.I - [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang [NOTES]

हर्षवर्धन का मूल्यांकन :— इतिहासकारों ने हर्ष का मूल्यांकन एक महान विजेता, साम्राज्य - निर्माता, कुशल प्रशासक एवं साहित्य तथा संस्कृति के रक्षक के रूप में किया है। बाणभट्ट और चीनी यात्री ह्वेनसांग ने हर्ष की प्रशंसा करते हुए उसे उत्तरी भारत का एक महान सम्राट बतलाया है। कुछ आधुनिक इतिहासकारों ने भी बाणभट्ट के स्वर में मिलाया है और उसे "हिन्दू काल का अन्तिम महान साम्राज्य - निर्माता" कहा है। उनका मत है कि हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत की राजनीतिक एकता की स्थापना के सभी प्रयास विफल हो गये। कुछ इतिहासकारों ने हर्ष की तुलना मौर्य सम्राट अशोक, गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त और मुगल सम्राट अकबर से भी की है। इसके विपरीत कुछ इतिहासकार हर्ष को इतना महत्व देने को तैयार नहीं है। डा० रमाशंकर त्रिपाठी का मत है कि हर्ष में न तो चन्द्रगुप्त मौर्य का सामरिक कौशल था, न अशोक की आदर्शवादिता और न अकबर की रचनात्मक

राजनीति एवं दूरदर्शिता ही। डा० रमेशचन्द्र मजूमदार और कुछ अन्य इतिहासकार हर्ष को हिन्दूकाल का अन्तिम महान साम्राज्य-निर्माता मानने को तैयार नहीं हैं। डॉ० मजूमदार उसे एक योग्य और उत्तरी भारत का एक प्रभावशाली राजा स्वीकार करते हुई भी उसे अन्तिम हिन्दू साम्राज्य निर्माता नहीं कहते। कुछ इतिहासकार तो हर्ष को एक साधारण शासक की श्रेणी में रखते हैं।

इतिहास में तथ्य का महत्व है और तथ्यपरक मूल्यांकन ही सही होता है। उक्त दोनों ही मत एकांगी अतिशयोक्तिपूर्ण और वास्तविकता से दूर हैं। उसने राजनीतिक अराजकता को समाप्त कर पुन उत्तरी भारत में एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। वह कार्य उसने साहस और धैर्य के साथ किया था। दूर-दूर के राजा भी उसकी प्रभुता स्वीकार करते थे। उसने गुप्तसम्राट समुद्रगुप्त की भाँति दक्षिण-विजय की भी नीति अपनायी थी किन्तु उसे असफलता ही हाथ लगी।

बल्लभी के शासक को तो वह अपना मित्र बना सका किन्तु चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के हाथों पराजित होकर उसे वापस लौटना पड़ा। उसे दक्षिण-विजेता होने का गौरव प्राप्त नहीं हो सका। शशांक की मृत्यु के बाद ही वह बंगाल पर अधिकार कर सका।

हर्ष को योग्य शासक माना गया है और भारतीय इतिहास में उसे सम्मानित स्थान भी प्रदान किया गया है। निःसन्देह वह एक उदार, प्रजावत्सल, विद्यानुरागी और धर्म-सहिष्णु सम्राट के रूप में भारतीय इतिहास में हमेशा याद किया जायेगा। किन्तु वह भारतीय इतिहास का न तो अन्तिम महान सम्राट था और न अन्तिम महान साम्राज्य-निर्माता ही। उसके बाद भी भारत में अनेक महान सम्राट और महान साम्राज्य-निर्माता हुए। हर्ष की सफलता बहुत अंश में व्यक्तिगत थी। वह एक उदार, सहिष्णु और दानी सम्राट था। किन्तु वह पूर्वजों की भाँति उस भावनात्मक एवं व्यावहारिक एकता स्थापित करने में असफल रहा जिससे भारत में एक स्थायी महान साम्राज्य स्थापित हो पाता। वह भारतीय समाज में उन तत्वों का पोषण न कर सका और न चक्रवर्ती सम्राट के आदर्श की उस परम्परा को पुनः स्थापित कर सका जो एक बड़े साम्राज्य की आधारशिला बन पाती।

इस कारण, हर्ष एक स्थायी साम्राज्य स्थापित करने में असफल रहा। उसका साम्राज्य उसकी मृत्यु के पश्चात् ही नष्ट हो गया।